Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies
Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com

ISSN:2584-105X **Pg. 122 - 125**

महात्मा गांधी का नैतिक दर्शन और पशु नैतिकता

निशा सैनी
शोधार्थी, दर्शनशास्त्र विभाग, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)
nisha.saini.581730@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र महात्मा गांधी के नैतिक मूल्यों और पशु नैतिकता के बीच संबंध का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। गांधी जी का नैतिक दर्शन अहिंसा, सत्य, और करुणा पर आधारित था, जो मानव-पशु संबंधों को एक नैतिक और आध्यात्मिक ढांचे में प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन नैतिकता की अवधारणा को परिभाषित करते हुए पशु नैतिकता के ऐतिहासिक विकास, मानव-पशु संबंधों की प्रकृति और आधुनिक युग में उत्पन्न समस्याओं—जैसे- मांस उद्योग की क्रूरता, पशुओं पर वैज्ञानिक प्रयोग, पशु-शोषण, वन्यजीव विनाश—पर प्रकाश डालता है। गांधी जी के दर्शन में पशु नैतिकता की स्थिति को उनके शाकाहार, गौ-रक्षा, और सभी प्राणियों के प्रति सम्मान के विचारों के माध्यम से विश्लेषित किया गया है। शोध यह तर्क देता है कि गांधी जी का अहिंसा का मूल्य वर्तमान की पशु समस्याओं—जैसे फैक्ट्री फार्मिंग और पर्यावरण संकट—के समाधान के लिए प्रभावी उपाय सुझाती है, जिसमें शाकाहार, पशु कल्याण कानून, और टिकाऊ जीवन शैली शामिल हैं। निष्कर्ष में, यह जोर दिया गया है कि गांधी जी का दर्शन एक नैतिक और संतुलित समाज की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

प्रमुख शब्द - महात्मा गाँधी, करुणा, पशु-नैतिकता, वैज्ञानिक प्रयोग, अहिंसा, सामाजिक-नैतिक जीवन

प्रस्तावना

महात्मा गांधी एक ऐसी शख्सियत थे जिन्होंने अपने जीवन और विचारों के माध्यम से नैतिकता को अहिंसा और सत्य के मूल्यों के द्वारा विश्व पटल पर स्थापित किया। उनका दर्शन केवल मानव समाज तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें पशुओं और प्रकृति के प्रति गहरी संवेदनशीलता भी शामिल थी। गांधी जी का मानना था कि सभी जीवों में एक ही जीवन शक्ति विद्यमान है और इसलिए पशुओं के प्रति हिंसा को वे मानवता के खिलाफ हिंसा मानते थे। यह शोध-पत्र गांधी जी के नैतिक दर्शन और पशु-नैतिकता के बीच संबंध को विस्तार से विश्लेषित करता है। इसके साथ ही, यह भी बताया गया है कि उनका अहिंसा का सिद्धांत वर्तमान समय की पशु समस्याओं को हल करने में कैसे उपयोगी हो सकते हैं। यह पत्र विभिन्न उप-विषयों जैसे नैतिकता की परिभाषा, पशु-मानव संबंध, और गांधी जी के विचारों की आधुनिक प्रासंगिकता पर प्रकाश डालता है।

1. नैतिकता :-

नैतिकता वह दार्शनिक अध्ययन है जो मानव व्यवहार को नैतिक मूल्यों के आधार पर परिभाषित करता है। यह उचित और अनुचित, शुभ और अशुभ के बीच अंतर करने का एक ढांचा प्रदान करता है जो व्यक्तिगत मूल्यों, सामाजिक नियमों और सांस्कृतिक मान्यताओं से प्रभावित होता है। नैतिकता का अध्ययन प्राचीन काल से चला आ रहा है। यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने इसे सुख (Eudaimonia)[1], कांट ने कर्तव्य (Duty), और मिल ने उपयोगिता (Utilitarianism) के आधार पर परिभाषित किया। दूसरी ओर, इम्मानुएल कांट ने नैतिकता को कर्तव्य (Duty) और तर्क से जोड़ा, जिसमें व्यक्तिगत इच्छाओं से ऊपर सामान्य नियमों का पालन करना शामिल था।[2]

भारतीय संदर्भ में, नैतिकता को धर्म, कर्म, सत्य और अहिंसा जैसे सिद्धांतों से जोड़ा गया है। गांधी जी के लिए नैतिकता का आधार अहिंसा और सत्य था। वे मानते थे कि नैतिकता केवल मानवों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसमें सभी प्राणियों के प्रति करुणा और सम्मान शामिल होना चाहिए। उनके अनुसार, "सत्य और अहिंसा ही वह मार्ग हैं जो हमें नैतिक जीवन की ओर ले जाते हैं"।[3] गांधी जी की नैतिकता एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो मानव और पशु दोनों को समान महत्व देती है। नैतिकता का यह विचार हमें यह सिखाता है कि हमारा व्यवहार न केवल अपने प्रति, बल्कि सभी जीवों के प्रति जिम्मेदार होना चाहिए।

2. पशु नैतिकता का इतिहास (मनुष्य और पशु सम्बन्ध):-

मानव इतिहास में नैतिकता का विकास विभिन्न सभ्यताओं और कालखंडों से प्रभावित हुआ है। प्राचीन काल में, पशुओं को अक्सर धार्मिक और नैतिक महत्व दिया जाता था। मिस्र में बिल्लियाँ पवित्र मानी जाती थीं, तो भारत में गाय को माता का दर्जा प्राप्त था। ऋग्वेद में भी पशुओं के प्रति सम्मान का उल्लेख मिलता है।[4] हालांकि, मध्ययुग और औद्योगिक क्रांति के बाद पशुओं का शोषण बढ़ा। पशुओं को केवल संसाधन के रूप में देखा जाने लगा, जिसके परिणामस्वरूप उनकी नैतिक स्थिति पर सवाल उठने लगे।

18वीं और 19वीं सदी में पश्चिमी दार्शनिकों ने पशु नैतिकता को औपचारिक रूप दिया। जेरेमी बेंथम ने लिखा, "प्रश्न यह नहीं है कि क्या वे सोच सकते हैं या बोल सकते हैं, बल्कि यह है कि क्या वे पीड़ा महसूस कर सकते हैं"।[5] इसके बाद, 20वीं सदी में पीटर सिंगर ने अपनी पुस्तक '*एनिमल लिबरेशन* में पशु अधिकारों को नैतिकता के केंद्र में रखा।[6] टॉम रेगन ने पशुओं को "जीवन के विषय" के रूप में परिभाषित किया, जिनके पास स्वाभाविक अधिकार हैं।[7]

गांधी जी का दृष्टिकोण इनसे भिन्न था। जहां पश्चिमी विचारक तर्क और अधिकारों पर जोर देते थे, गांधी जी ने पशु नैतिकता को अहिंसा और आत्मिक एकता से जोड़ा। उनके लिए पशु केवल उपयोग की वस्तु नहीं, बल्कि ईश्वर की सृष्टि का हिस्सा थे। वे कहते थे, "मैं हर जीव में ईश्वर को देखता हूँ, चाहे वह मानव हो या पशु"।[8] गांधी जी ने पशु नैतिकता को एक आध्यात्मिक और व्यावहारिक आयाम दिया, जो भारतीय संस्कृति की जड़ों से जुड़ा था। उनके विचारों ने पशु नैतिकता को एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया, जिसमें करुणा और सह-अस्तित्व पर बल दिया गया।

मानव और पशु संबंध प्रागैतिहासिक काल से जटिल और बहुआयामी रहे हैं। प्रारंभिक मानव ने पशुओं को शिकार के रूप में देखा, लेकिन जैसे-जैसे सभ्यता विकसित हुई, पशुओं को पालतू बनाया गया। बैल खेती में सहायक बने, घोड़े परिवहन का साधन बने, और कुत्तों ने घरों की रक्षा की। भारतीय संस्कृति में पशुओं का विशेष स्थान रहा है। महाभारत में युधिष्ठिर का कुत्ते के प्रति प्रेम इस बात का प्रमाण है कि पशु केवल उपयोग की वस्तु नहीं, बल्कि साथी भी थे।[9]

हालांकि, आधुनिक युग में यह संबंध असंतुलित हो गया है। औद्योगीकरण और शहरीकरण ने पशुओं को केवल उत्पादन के साधन में बदल दिया। फैक्ट्री फार्मिंग में मुर्गियों, गायों और सूअरों पर क्रूरता आम बात है। वन्यजीवों का शिकार और उनके आवास का विनाश भी बढ़ रहा है। गांधी जी इस असंतुलन के खिलाफ थे। वे मानते थे कि "पशुओं के प्रति हमारा व्यवहार हमारी सभ्यता का दर्पण है"।[10] उनके लिए मानव और पशु के बीच सह-अस्तित्व और करुणा का रिश्ता होना चाहिए, न कि शोषण का। गांधी जी का यह विचार आज भी हमें यह सिखाता है कि हमें अपने लाभ के लिए पशुओं का उपयोग करने के बजाय उनके साथ एक संतुलित संबंध बनाना चाहिए।

3. मानव और पशु समस्याएं:-

आधुनिक समय में मानव और पशु संबंध कई समस्याओं से जूझ रहे हैं। पहली समस्या है 'पशुओं का व्यावसायिक शोषण'। विश्व भर में मांस उद्योग में हर साल अरबों पशुओं को मार दिया जाता है, जिसमें उनकी पीड़ा को नजरअंदाज किया जाता है। दूसरी समस्या है 'पर्यावरण विनाश'। जंगलों की कटाई और प्रदूषण के कारण पशुओं का प्राकृतिक आवास नष्ट हो रहा है, जिससे कई प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर हैं। तीसरी समस्या है 'पशुओं पर वैज्ञानिक प्रयोग'। चिकित्सा और सौंदर्य प्रसाधन उद्योगों में पशुओं पर होने वाले प्रयोग उनकी नैतिक स्थिति पर सवाल उठाते हैं। चौथी समस्या 'शहरीकरण से उत्पन्न मानव-पशु संघर्ष' है। आवारा कुत्तों, बंदरों और मवेशियों की बढ़ती संख्या शहरों में तनाव का कारण बन रही है। भारत में हर साल सड़क दुर्घटनाओं में हजारों पशु मरते हैं। गांधी जी इन समस्याओं को मानव के लालच और हिंसा का परिणाम मानते थे। वे कहते थे, "पृथ्वी सभी की आवश्यकताएँ पूरी कर सकती है, लेकिन लालच को नहीं"।[11] उनके विचार आज भी इन समस्याओं के समाधान के लिए प्रासंगिक हैं। इन समस्याओं को हल करने के लिए हमें गांधी जी के संयम और करुणा के सिद्धांतों को अपनाने की जरूरत है।

4. महात्मा गांधी के दर्शन में पशु नैतिकता:-

गांधी जी का नैतिक दर्शन अहिंसा, सत्य और संयम पर आधारित था। उनके लिए पशु नैतिकता केवल एक सैद्धांतिक अवधारणा नहीं, बल्कि जीवन का व्यावहारिक हिस्सा थी। गांधी जी शाकाहारी थे और मांसाहार को हिंसा का एक रूप मानते थे। उनकी आत्मकथा *'सत्य के साथ मेरे प्रयोग'* और पुस्तक *'हिंद स्वराज'* में वे पशुओं के प्रति अपने विचार व्यक्त करते हैं। उनका प्रसिद्ध कथन है, "एक राष्ट्र की महानता और नैतिक प्रगति को इस बात से मापा जा सकता है कि वह अपने पशुओं के साथ कैसा व्यवहार करता है"।[12]

गांधी जी ने गाय की रक्षा पर विशेष जोर दिया, लेकिन इसे धार्मिकता से अधिक नैतिकता से जोड़ा। वे कहते थे, "गाय की रक्षा करना मेरा धर्म नहीं, बल्कि कर्तव्य है, क्योंकि वह मानव की मूक सेविका है"।[13] उनके आश्रमों में पशुओं की देखभाल को प्राथमिकता दी जाती थी। वे पशुओं के प्रति क्रूरता को मानवता के पतन का प्रतीक मानते थे। गांधी जी का यह दृष्टिकोण पशु नैतिकता को एक आध्यात्मिक और सामाजिक आयाम देता है, जो आज भी प्रेरणादायक है। उनके विचारों ने यह साबित किया कि नैतिकता का असली अर्थ सभी जीवों के प्रति करुणा और सम्मान है।

5. महात्मा गांधी के अहिंसा के मूल्य से वर्तमान की पशु-समस्याओं के उपाय:-

गांधी जी का अहिंसा का सिद्धांत वर्तमान पशु समस्याओं के समाधान के लिए एक प्रभावी मार्गदर्शक हो सकता है। इसके कुछ व्यावहारिक उपाय निम्नलिखित हैं:-

i. **शाकाहार को बढ़ावा देना:-** मांस उद्योग में पशुओं पर होने वाली हिंसा को कम करने के लिए शाकाहार अपनाना जरूरी है। गांधी जी इसे व्यक्तिगत और सामाजिक नैतिकता का हिस्सा मानते थे।[14]
ii. **पशु कल्याण कानून**:- सख्त कानून बनाकर पशु क्रूरता को रोका जा सकता है। भारत में पशु क्रूरता निवारण अधिनियम**, 1960** को और प्रभावी बनाने की जरूरत है।
iii. **जागरूकता अभियान:-** लोगों को पशुओं के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए शिक्षा और अभियान चलाए जा सकते हैं। गांधी जी अपने लेखों और भाषणों के माध्यम से यह कार्य करते थे।
iv. **संयम और सादगी:-** गांधी जी का संयम का सिद्धांत हमें अनावश्यक उपभोग से रोकता है**,** जैसे चमड़े और पशु उत्पादों का प्रयोग कम करना।
v. **पर्यावरण संरक्षण:-** वनों और प्राकृतिक आवासों की रक्षा से पशुओं का जीवन सुरक्षित होगा। गांधी जी प्रकृति के साथ सामंजस्य की बात करते थे।
vi. **स्थानीय समाधान:-** आवारा पशुओं की समस्या को हल करने के लिए नसबंदी और पुनर्वास जैसे कदम उठाए जा सकते हैं।
vii. **टिकाऊ खेती:-** गांधी जी के स्वावलंबन के सिद्धांत को अपनाकर ऐसी खेती को बढ़ावा देना जो पशुओं पर निर्भर न हो।

इन उपायों को अपनाकर गांधी जी के अहिंसा के मूल्य को आज के संदर्भ में लागू किया जा सकता है। यह न केवल पशुओं की स्थिति सुधारेगा, बल्कि मानव समाज को भी अधिक नैतिक और संवेदनशील बनाएगा।

निष्कर्ष:-

महात्मा गांधी का नैतिक दर्शन और पशु नैतिकता एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। उनका अहिंसा का सिद्धांत न केवल मानव समाज, बल्कि पशुओं और प्रकृति के प्रति भी करुणा और सम्मान का संदेश देता है। आज के समय में जब पशु शोषण, पर्यावरण संकट और मानव-पशु संघर्ष बढ़ रहे हैं, गांधी जी के विचार और भी प्रासंगिक हो गए हैं। उनके सिद्धांत—अहिंसा, शाकाहार, संयम, जागरूकता और प्रकृति संरक्षण—हमें एक ऐसा समाज बनाने की प्रेरणा देते हैं जहां मानव और पशु दोनों का कल्याण संभव हो। गांधी जी का यह विश्वास कि सभी जीवों में एक ही आत्मा है, हमें यह सिखाता है कि नैतिकता का असली मापदंड सभी प्राणियों के प्रति हमारा व्यवहार है। उनके विचार आज भी हमें यह प्रेरणा देते हैं कि हम अपने जीवन में अहिंसा और करुणा को अपनाकर एक बेहतर विश्व का निर्माण करें।

सन्दर्भ-सूची:-

1. अरस्तु; 'निकोमेकियन एथिक्स' अनुवादक डब्लू. डी. रोस, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, **2009** ,पृ. **35**।
2. कांट, इम्मानुएल; 'ग्राउंडवर्क ऑफ़ द मेटाफिजिक्स ऑफ़ मोरल', अनुवादक मेरी ग्रेगोर, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, **1997** पृ. 45।
3. गांधी, मोहनदास करमचंद; 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग', नई दिल्ली, राजपाल प्रकाशन, 2010 पृ. 89।
4. 'ऋग्वेद' अनुवादक राल्फ टी. एच. ग्रिफ्फिथ, मोतीलाल बनारसीदास, **1896 1.164.40**।
5. बेंथम, जेरेमी; 'एन इंट्रोडक्शन टू द प्रिंसिपल्स ऑफ़ मोरल एंड लेजिस्लेशन लंदन', ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1789 पृ. 67।
6. सिंगर, पीटर; 'एनिमल लिबरेशन' न्यूयॉर्क, हार्पर कॉलिन्स, 1975, पृ. **23**।
7. रेगन, टॉम; 'द केस फॉर एनिमल राइट', यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफोर्निया प्रेस, **2004,** पृ. **56**।
8. गांधी, मोहनदास करमचंद; सम्पूर्ण गांधी वाङमय', प्रकाशन प्रभाग, भारत सरकार,**1958-1994 34:112**।
9. 'महाभारत' अनुवादक केसरी मोहन गांगुली, मुंशीराम मनोहरलाल प्रकाशन, **2000 17.3**।
10. गांधी, मोहनदास करमचंद 'यंग इंडिया' , नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, **1919-1931** पृ. **45**।
11. गांधी, मोहनदास करमचंद 'हरिजन', नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, **1933-1956**, पृ- पृ. 67।
12. गांधी, मोहनदास करमचंद 'यंग इंडिया', नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, **1919-1931** पृ. **23**।
13. गांधी, मोहनदास करमचंद; 'सम्पूर्ण गांधी वाङमय', भारत सरकार, **1958-1994 56:78**।
14. गांधी, मोहनदास करमचंद; 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग', नई दिल्ली, राजपाल प्रकाशन, 2010 पृ.123।

गांधी, मोहनदास करमचंद 'हिंद स्वराज', अहमदाबाद, नवजीवन प्रकाशन, 1938।

****